प्रमाण-पत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि कु. शाहीन रफीक अहमद आगलावणे ने मेरे निर्देशन में एम्. फिल उपाधि के लिए यह लघु शोध-प्रबंध तैयार किया है और मेरी जानकारी में यह उनका मौलिक शोध-कार्य है।

A G Kulkarni 28-6-93

[डॉ. अवंतिका कुलकर्णी]

हस्ताक्षर

निवेदन

मेरे इस लघु शोध प्रबंध का विषय " सूर का वात्सल्य भाव " है। इस प्रबंध में मैंने सूरदास का जीवनवृत्त उनकी रचनाएँ, कृष्णभक्ति परम्परा, वात्सल्यभाव तथा पुष्टि संप्रदाय इनका विवेचन किया है।

मध्ययुग में पूरे भारत में भक्ति का प्रबल आदोलन उठा हुआ था, जिस में अनेक प्रकार की धाराएँ उमड पडी थी, वात्सल्य भक्ति उनमें से एक महत्त्वपूर्ण धारा थी, जो महाकवि सूरदास द्वारा प्रस्थापित की गयी। उन्होंने अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण को बाल रूप में चित्रित किया और वे वात्सल्य भक्ति भावना में अमर हो गये।

१] पृथम अध्याय:-

पृथम अध्याय में सूरदास के जीवनवृत्त के बारे में चर्चा की गयी है। अनेक उपलब्ध ग्रंथों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि सूरदास का जन्म सं. १५३५ वैशाख शुध्द पंचमी के दिन हुआ था। सूरदास जन्मांध थे। उन्हें भगवत कृपा से दिव्य दृष्टि प्राप्त थी। उन्होंने कम उम्र में ही घर त्यागा था। सं. १५५४ में वे मथुरा पहुँचे। वहीं पर वल्लभाचार्य ने सूरदास पर प्रसन्न हो कर सं. १५६७ में पुष्टिमार्ग की दीक्षा दी। तब से वे देहावसान तक गोवर्धन पर्वत के नाथ मन्दिर की कीर्तन सेवा में रहे। उनका देहावसान विद्वानों ने सं. १६४० माघ शुध्द द्वितीया को मान्य किया है।

सूरदास की रचनाओं को लेकर विवाद है। उनकी प्राय: सभी रचनाएँ "सूरसागर" में एकत्रित हैं। इन रचनाओं में पुष्टिमार्ग के दर्शन की सुन्दर अभिव्यक्ति हुयी है। पुष्टिमार्ग दर्शन शुध्दाद्वैतवादी हैं।

२] द्वितीय अध्यपय:-

दूसरे अध्याय में कृष्ण भक्ति परम्परा और सूरदास का विवेचन किया गया है। इसमें भक्ति तथा विशिष्ट रूप से कृष्ण भक्ति पर विचार किया गया है। इस में सारे कृष्ण सम्प्रदाय और सम्प्रदाय मुक्त कवि तथा संप्रदायेतर कवि आते हैं। जिन्होंने अपने कृष्णभक्ति पद लिख कर हमारे सामने सगुणसाकार भक्ति की उपासना करने का आदर्श रखा। इन सभी संप्रदायों में से वल्लभसंप्रदाय को बहुत प्रसिध्द मिली। इस अध्याय में सूरदास व उनकी भक्ति निरूपन का भी विवेचन किया गया है।

३] तृतीय अध्याय:-

इस अध्याय में " वल्लभसंप्रदाय " पर विवेचन किया गया है। वल्लभाचार्यजी का मार्ग पुष्टिमार्ग था और पुष्टिमार्ग का दर्शन शुध्दाद्वैतवादी है। इनमें ब्रह्म, जीव, जगत, संसार, माया और मोक्ष सभी मान्यताएँ उपलब्ध हैं। इस संप्रदाय में वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र गो. विटठ्लनाथ के द्वारा स्थापित "अष्टछाप" को बहुत ही ख्याति मिली। इसमें सूरदास का प्रथम स्थान था। सूरदास के दीक्षा गुरू वल्लभाचार्यजी होने की वजह से उनके काव्य में पुष्टि मार्ग के सिध्दांत तथा उन्हीं के साधना पक्ष में लिखा हुआ काव्य है।

४] चतुर्थ अध्याय:-

इस अध्याय में वात्सल्य भाव की दृष्टि से सूर के बाल चित्रण का अध्ययन किया गया है। पूर्वाचार्यों ने वात्सल्य को स्वतंत्र रस के रूप में प्रतिष्ठा नहीं दी थी। भरतमुनि से लेकर रसचर्चा में वात्सल्य उपेक्षित रहा। लेकिन मध्ययुग में आचार्य विश्वनाथ ने उसे एक स्वतंत्र रस के रूप में काव्यशास्त्र में प्रतिष्ठित किया। भक्तिशास्त्र में भक्ति को एक मात्र रस माना गया और उसमें वात्सल्य को स्थान प्राप्त हो गया। इस प्रकार काव्यशास्त्र तथा भक्तिशास्त्र दोनों में वात्सल्य समादृत हुआ। सूरदास ने बालचित्रण करके इस में माता-पिता के अतिरिक्त अन्य परिजनों को भी आश्रय बनाया है। उन्होंने बालकों के रूप, उनकी चेष्टाएँ, उनकी क्रीडाएँ आदि को उद्दीपन बना कर विविध संचारी भावों को प्रकाशित किया है। सूर के बाल चित्रण में वात्सल्य भाव के सभी अवयवों का निरूपण पाया जाता है।

कृतज्ञता ज्ञापन:-

इस शोध प्रबंध का संकल्प मैनें मेरी निर्देशिका डॉ. अवंतिका कुलकर्णी रीडर एवं हिंदी विभागध्यक्षा, श्रीमती मधुताई गरवारे कन्या महाविधालय की प्रेरणा के कारण किया था। उन्हीं के कुशल निदेशन में मैंने अपना कार्य प्रारंभ किया। उनके पति एवं हिंदी के विद्वान डॉ. गो. रा. कुलकर्णी ने भी मुझे हमेशा स्नेहपूर्ण प्रोत्साहन देकर समय समय पर कठिनाइयाँ सुलझा कर यह कार्य पूर्ण करने में मेरी मदद की।

इस शोध प्रबंध को पूरा करते वक्त मुझे शिवाजी विधापीठ के हिंदी विभाग के अध्यक्ष, आदरणीय डॉ. वसंत मोरेजी, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष प्रा. शरद कणधरकरजी, हमारे प्राध्यापक मा. के. तिवलेजी, तथा प्रा. कू. ज. वेद पाठकजी और प्रा. रजनी भागवतजी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिनके मार्गदर्शन के फलस्वरूप मैं यह कार्य पूरा कर सकी।

मेरे अध्ययन के हेतु श्रीमती मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री रा. ज. मसुटगे ने ग्रंथालय की सारी सुविधाएँ बडी आत्मीयता से उपलब्ध करा दी। उनके प्रति तथा उनके सहयोगियों के प्रति धन्यवाद प्रकट करती हूँ।

मेरे घरवालों ने भी इस कार्य के लिए हमेशा मुझे बढावा दिया। तथा समय समय पर मेरी हर कठिनाइयों को दूर करते रहे इसलिए उनके प्रति कृतज्ञताज्ञापन न करके उनके अनुग्रह को अनुभूत करने में ही मुझे संतोष है।

मिरज के जवाहर उर्दू हायस्कूल के चेअरमन श्री. इलियास नायकवडी जी ने टंकलेखन के लिए मुझे सारी सुविधाएँ प्रस्तुत कर दी। रिश्ते में वे मेरे चाचा है, अत: अत: उन्होंने मुझे अपनी बेटी की तरह मुझे प्यार दिया और सब तरह की मदद की। मैं उनकी ऋणी रहूँगी।

अंत में मेरे पारिवारिक जनों तथा मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। उनके प्रेम, सहानुभूति तथा प्रेरणा के अभाव में मैं इस कार्य का भार उठाने में असमर्थ हो जाती।

यह सारा प्रबंध मैंने स्वंय टंकलिखित किया है। अत: यदि इसमें कोई टंकन दोष रह गया हो तो क्षमा प्रार्थी हूँ।

शाहीन अगिलावणे.

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-